गौतम बुद्ध

प्राणनाथ वानप्रस्थी

गौतम बुद्ध

प्राणनाथ वानप्रस्थी

शिक्षा भारती, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

पूज्य माता सरस्वतीजी

के

पावन चरणों में

सूची

वंश और देश

आज से ढाई हजार वर्ष पहले भारतवर्ष में एक सुन्दर नगर कपिलवस्तु बसा हुआ था। कहते हैं, इसी स्थान पर ऋषि कपिल ने तप किया था, इसलिए इसका नाम कपिलवस्तु पड़ा। इस नगर के पास एक पहाड़ी नदी बहती थी, जिसका नाम रोहिणी था। इस समय इस नगर का निशान तक नहीं मिलता। यह स्थान अयोध्या से पचीस मील उत्तर-पूर्व में है।

इस राज्य में यह नियम था कि प्रजा ही राजा को चुनती थी। जो सबसे योग्य और गुणी समझा जाता था, उसे ही राजा बनाया जाता था। प्रजा की इच्छानुसार ही राज्य चलाया जाता था। लोग अधिकतर खेती और पशुपालन करते थे। सारा राज्य सुख और धन-सम्पत्ति से भरपूर था। यहां के राजा शाक्य-

वंशीय क्षत्रिय कहलाते थे। यह राज्य दूर-दूर तक फैला हुआ था।

इस समय यहां राजा शुद्धोदन राज्य करते थे। इनकी दो रानियां थीं। एक का नाम मायावती और दूसरी का नाम गौतमी था। मायावती से उन्हें एक पुत्र हुआ जो गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुए।

जन्म

इस होनहार बालक का जन्म वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। इस बालक के जन्मते ही राज्य में बड़े-बड़े शुभ शगुन हुए, इसलिए इसका नाम सिद्धार्थ रखा गया। सिद्धार्थ शब्द का अर्थ है, सब कार्यों को सिद्ध करने वाला। इस शुभ अवसर पर राजा ने बड़े-बड़े यज्ञ किए और भरपूर दान दिया। राज्य-भर में बड़े-बड़े उत्सव मनाए गए और बालक की लम्बी आयु के लिए प्रार्थनाएं की गईं।

इस राजकुमार के जन्म के सातवें दिन इसकी माता की मृत्यु हो गई। इस कारण से गौतमी देवी की गोद में इसका लालन-पालन हुआ।

कपिलवस्तु नगर के पास ही वन में एक महात्मा तपस्या करते थे। राजा शुद्धोदन ने इन्हें आदर के

साथ नगर में बुलवाया और बालक को आशीर्वाद देने के लिए कहा। वह बालक को देखते ही प्रसन्न हो गए और बोले, "राजन्! यह बालक संसार को सच्चे धर्म का मार्ग दिखाएगा। यह महान् पुरुष बनेगा।" यह शब्द सुनकर राजा और उनके मन्त्रियों का हृदय प्रसन्नता से भर गया।

बचपन

उन दिनों देश में प्रतिवर्ष हल जोतने का उत्सव होता था। राजा, मन्त्री और सभी प्रकार के लोग यह उत्सव मनाते थे। एक वर्ष सिद्धार्थ ने यहां देखा कि पशुओं के साथ बड़ी निर्दयता का बर्ताव होता है। उनका कष्ट स्मरण कर राजकुमार की आंखों में आंसू छलछला आए और वह उस स्थान से हटकर एक पेड़ के नीचे आंखें मूंदकर बैठ गए। उत्सव की समाप्ति पर राजा शुद्धोदन को अपना पुत्र कहीं दिखाई न दिया। खोजते-खोजते राजा उसी पेड़ के नीचे पहुंच गए और देखा कि पुत्र की आंखें बन्द हैं और मुख पर शान्ति बरस रही है। राजा का मस्तक श्रद्धा से झुक गया।

इनके बचपन की एक और घटना है। एक बार राजकुमार तीर-कमान हाथ में लिये घूम रहे थे, तो

देखा आकाश में हंस उड़ते हुए जा रहे हैं। इसी समय किसी ने तीर मारकर एक हंस को घायल कर दिया और वह छटपटाता हुआ भूमि पर गिर पड़ा। कुमार सिद्धार्थ ने उसे झटपट गोद में उठा लिया और तीर को उसके शरीर से अलग कर दिया। वे धीरे-धीरे उसके शरीर को सहलाने लगे और घाव पर मरहम लगाया। कुमार ने उस तीर को अपने शरीर में चुभोकर देखा कि पक्षी को कितना कष्ट हुआ होगा। उसका कष्ट अनुभव कर उनका हृदय टूक-टूक हो गया।

इतनी देर में सिद्धार्थ का चचेरा भाई देवदत्त आ गया। उसने कहा, "इस हंस को मैंने मारा है, इसे मुझे दे दो।" सिद्धार्थ ने उसकी बात को नहीं माना। देवदत्त ने राजा के दरबार में जाकर न्याय की पुकार की। राजा बड़े सोच में पड़े।

इतने में एक वृद्ध मंत्री उठा और बोला, "हे राजन् ! हंस को दरबार के बीच में छोड़ दिया जाए। दोनों कुमार दो कोनों पर खड़े हो जाएं। बारी-बारी से दोनों हंस को पुकारें। वह जिसके पास चला जाए, पक्षी उसे दे दिया जाए।" यह मत सबको ठीक जंचा।

राजा के बुलाने पर राजकुमार सिद्धार्थ हंस को लेकर दरबार में आए। पक्षी को दरबार के मध्य में
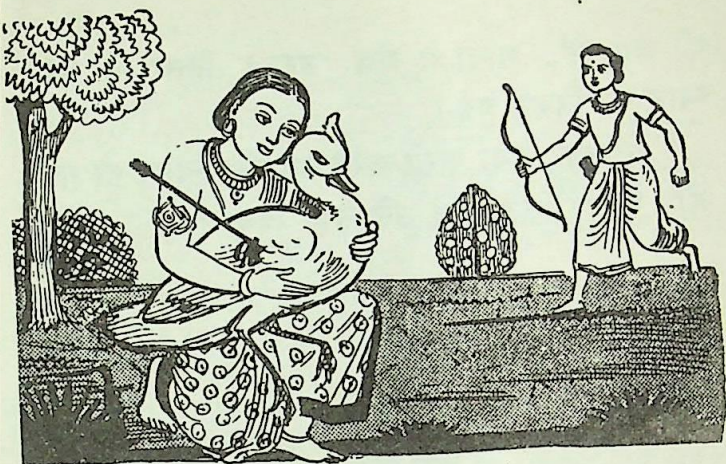
छोड़ दिया गया ।

पहले देवदत्त की बारी थी । उसने बड़े प्रेम से पुकारा, परन्तु पक्षी उसकी आवाज़ सुनकर सहम गया । देवदत्त ने बहुतेरा यत्न किया, पर पक्षी ने उस ओर ताका भी नहीं ।

अब कुमार सिद्धार्थ की बारी थी । उसने ज्यों ही पुकारा, वह पक्षी अपने कटे पंखों के कारण धीरे-धीरे सरकता हुआ अपने प्राणदाता की गोद में आ बैठा । इस दृश्य को देखते ही सारा दरबार 'राजकुमार सिद्धार्थ

की जय हो', शब्दों से गूंज उठा। हिंसा के ऊपर प्यार की विजय हुई।

निरन्तर सेवा करते-करते वह हंस स्वस्थ हो गया और कुमार सिद्धार्थ ने उसे उड़ा दिया।

वैराग्य की आंधी

अब कुमार सिद्धार्थ युवा हो चले थे, परन्तु वह सदा सोचा करते थे कि संसार दुःखों का घर है। रोग, बुढ़ापा और मृत्यु छाया की भांति प्राणी के साथ लगे हैं। इनसे किस प्रकार छुटकारा पाया जाए ?

राजा शुद्धोदन को अपने पुत्र की ऐसी हालत देखकर बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने उसके मन-बहलाव के लिए सब साधन जुटाए, पर व्यर्थ। राजा ने ऐसा प्रबन्ध किया कि कुमार के सामने कभी भी दुःख की बात चलाई ही न जाए।

एक बार कुमार पिता की आज्ञा लेकर नगर घूमने के लिए निकले। नगर खूब सजाया गया। लोग स्थान-स्थान पर राजकुमार पर फूलों की वर्षा कर रहे थे। इतने में उन्होंने देखा कि एक वृद्ध, जिसकी पीठ कुबड़ी

हो चुकी है, लाठी टेकता हुआ धीरे-धीरे सरकता चला जा रहा है। सिद्धार्थ ने अपने सारथी से पूछा, "इस आदमी को क्या हुआ ?" सारथी हाथ जोड़कर बोला, "यह मनुष्य बूढ़ा हो गया है।" कुमार ने फिर पूछा, "क्या मैं भी बूढ़ा होऊंगा ?" इस पर सारथी नम्रता से बोला, "राजकुमार ! हर मनुष्य समय आने पर बूढ़ा होता है और उसे यह दुःख सहना पड़ता है।"

अब रथ और आगे बढ़ा। चार आदमी एक शव को उठाए लिए जा रहे हैं। कुमार अब तो सहम गए और सारथी से पूछा, "इस आदमी को ऐसे कन्धों पर

उठाकर क्यों ले जा रहे हैं ?" सारथी ने उत्तर दिया, "कुमार ! यह प्राणी मर चुका है, और इसे जलाने के लिए ले जा रहे हैं।" राजकुमार के और पूछने पर सारथी ने बताया कि हर प्राणी का यही अन्त होता है। यह संसार का अटल नियम है।

राजकुमार यह दृश्य देखकर घबरा गए और सारथी को कहा कि रथ लौटाकर ले चलो। इसके बाद सिद्धार्थ और भी गम्भीर हो गए। वैराग्य के इन थपेड़ों ने उन्हें चलायमान कर दिया। वह इन दुःखों से छूटने का उपाय ढूंढ़ने लगे।

विवाह और गृह-त्याग

राजा शुद्धोदन ने अपने पुत्र को उदास देखा, तो उसे विवाह बंधन में बांधने का निश्चय कर लिया। एक सुन्दर और सुघड़ राजकुमारी यशोधरा को उसका जीवन-साथी बना दिया। यह देवी अपने पति को हर प्रकार से प्रसन्न रखती और सदा उसकी सेवा में लीन रहती। राजकुमार भी उस देवी के आचरण से प्रसन्न रहते, परन्तु सांसारिक दुःखों से छूटने का उपाय वह सदा ढूंढ़ा करते।

कहते हैं, राजकुमार सिद्धार्थ अपने राज्य-भर में सबसे उत्तम घुड़सवार थे। प्रजा उनके गुणों पर मोहित थी।

समय पाकर उनके घर एक पुत्र हुआ, जिसका नाम राहुल रखा गया।

एक बार राजकुमार उद्यान में घूम रहे थे, उन्हें एक साधु मिला। साधु ने सिद्धार्थ को उपदेश दिया कि हर मनुष्य को मुक्ति पाने के लिए पूरा यत्न करना चाहिए, तभी जीव दु:खों स छूट सकता है। राजकुमार ने चरण छूकर कहा, "महात्मन् ! मेरे पिता कहते हैं कि जवानी में तो घर रहो और वृद्ध होने पर मुक्ति का उपाय ढूंढ़ो।" अब साधु ने कुमार को बताया कि तुम्हारे पिता ने यह मोह के कारण ही कहा है। जवानी ही एक ऐसा समय है, जब मनुष्य तप करके परम आनन्द को पा सकता है। बुढ़ापे में तो शरीर दुर्बल हो जाता है और उससे कुछ नहीं बन सकता, इसलिए कुमार, समय को मत खोओ और परम लक्ष्य को पाने के लिए अभी से जुट जाओ। साधु इतना कहकर चले गए।

राजकुमार इस उपदेश को पाकर निहाल हुए और उन्होंने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। वे अपने पिता के पास गए और दोनों हाथ जोड़कर सिर नवा-कर नम्रता से कहा, "पूज्य पिताजी ! मैं संन्यास लेकर मुक्ति को ढूंढ़ूंगा। गृहस्थ में यह सब साधन नहीं बन सकते, अतः आप मुझे आज्ञा दीजिए।" राजा यह सुन-कर अवाक् रह गए और उन्होंने पुत्र को बहुतेरा समझाया, परन्तु वह अपने विचार पर दृढ़ रहा।

सायंकाल को जब कुमार महल में आए तो यशोधरा देवी ने उन्हें उदास देखकर पूछा, "मेरे जीवनधन ! आप किस सोच में पड़े हैं ?" इसपर कुमार ने उन्हें भी बताया कि संसार दुःखों का सागर है, मैं इससे छूटना चाहता हूं। इसके लिए मुझे घर छोड़ना ही पड़ेगा। यह सुनते ही यशोधरा देवी दुःख से व्याकुल हो गईं।

उस रात कुमार को नींद न आई। वह आधी रात में उठे और घर-बार छोड़कर चलने लगे, पर मोह से पांव रुक गए। वह अंतिम बार अपनी पत्नी और पुत्र को देखने के लिए महल में गए। देखा कि बच्चा अपनी माता से लिपटा हुआ है। एक बार तो इच्छा हुई कि पुत्र को प्यार कर लूं, परन्तु इससे उसकी माता जग जाएगी और मैं न जा सकूंगा। कुमार मन कड़ा करके महल से बाहर निकल आए और अपने सारथी को जगाया। तुरन्त रथ तैयार करवाकर चल पड़े।

घनघोर वन में पहुंचकर उन्होंने सारथी को अपने आभूषण और वस्त्र देकर लौटा दिया और फटे-पुराने चीथड़े पहनकर चल दिए। इस समय राजकुमार सिद्धार्थ उनतीस वर्ष के हो गए थे।

सारथी रोता-पीटता नगर को लौटा। राजा,
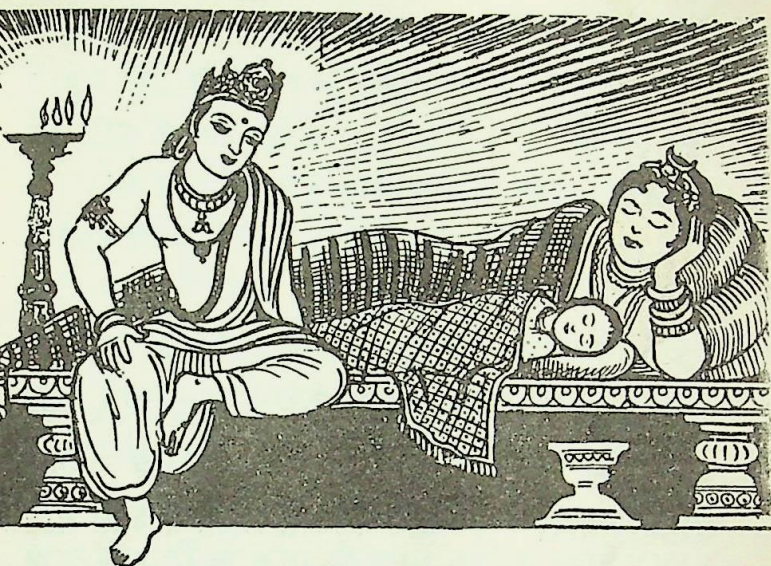
देवी यशोधरा और प्रजाजनों के दु:खों का पार न रहा। राजा शुद्धोदन ने अपने कुल-गुरु को सिद्धार्थ के पास भेजा ताकि वह उसे समझा-बुझाकर लौटा लाएं। परन्तु कुमार सिद्धार्थ तो अपनी धुन के पक्के थे, वे न लौटे।

साधना

चलते-चलते सिद्धार्थ राजगृह नगर में पहुंचे । नगर के बाहर बड़ी सुन्दर गुफाएं थीं, वहीं उन्होंने अपना आसन जमाया । एक बार नगर से भिक्षा ले आते और शेष सारा दिन साधना में बीतता । जब वे नगर में भिक्षा एकत्र करने जाते, तो उनके सुन्दर रूप को नगरवासी एकटक निहारते रहते ।

धीरे-धीरे यह समाचार वहां के राजा बिम्बसार के पास पहुंचा । वह सुनते ही सिद्धार्थ के स्थान पर गया और आदर से बोला, "आप जैसे वीर पुरुष को यह शोभा नहीं देता, आप गृहस्थ में रहकर प्रजापालन करें ।" इस पर सिद्धार्थ ने उत्तर दिया, "राजन् ! मैं इन सब बखेड़ों को छोड़कर परम आनन्द की खोज में निकला हूं । अब मैं नहीं लौट सकता ।" राजा बिम्बसार ने यहां तक कहा, "मैं अपना आधा राज्य आपको

दे दूंगा, आप वन में मत जाएं। परन्तु अपने विचारों में दृढ़ सिद्धार्थ ने उनकी एक न मानी और सच्चे गुरु की खोज में चल पड़े।

उस समय आकाड़ कालाम और रुद्रक नामक दो विद्वान् बड़े प्रसिद्ध थे। इनमें से पहले के 300 और दूसरे के 700 शिष्य थे। सिद्धार्थ बारी-बारी दोनों के पास गए और शिष्य बनकर मुक्ति के उपाय पूछे। बहुत काल साधना करते रहने पर भी उन्हें शान्ति न मिली। तब अकेले रहकर अभ्यास करने का निश्चय किया।

सिद्धार्थ के उच्च विचारों को देखकर रुद्रक के पांच विद्यार्थी भी साथ हो गए। एकान्त स्थान देखकर सबने तप करना शुरू किया। खाना कम करते-करते और कठोर साधना के कारण सिद्धार्थ का शरीर इतना निर्बल हो गया कि वे बड़ी कठिनाई से चल सकते थे।

इस प्रकार छह वर्ष तक कठोर तपस्या करते-करते शरीर सूखकर कांटा हो गया, परन्तु कुछ हाथ न आया। अब सिद्धार्थ ने सोचा इस प्रकार शरीर को सुखाना पाप है। इसे उचित खान-पान देना ही चाहिए।

सिद्धार्थ के विचारों का बदलना उनके पांचों साथियों को न भाया। उन्होंने समझा कि सिद्धार्थ गिर गया है, इसलिए उन्होंने साथ छोड़ दिया।

ज्ञान-प्राप्ति

अब सिद्धार्थ वहां से अकेले ही चल पड़े और सेनानी गांव के पास एक बोधिवृक्ष के नीचे जाकर बैठ गए। प्रातःकाल होते ही एक धर्मात्मा सेठ की पुत्री सुजाता सोने की थाली में खीर लेकर आई और उसने बड़े आदर से वह खीर तपस्वी सिद्धार्थ को भेंट की। इस खीर को खाते ही उनकी आंखें खुल गईं और शरीर स्वस्थ हुआ।

अब सिद्धार्थ ने प्रण किया कि इस स्थान पर तब तक बैठा रहूंगा, जब तक दुर्लभ ज्ञान प्राप्त न होगा, शरीर भले ही गल-सड़ जाए। अब वे नियम से भोजन करने लगे और शरीर-रक्षा पर पूरा ध्यान देने लगे।

कुमार की साधना अन्तिम सीमा पर पहुंच रही

थी। उनके महान् त्याग और तपस्या के कठोर पौधे को फल लगा। हृदय आनन्द से भर गया और जन्म-जन्मान्तरों के दुःख का अन्त हो गया। जो ज्ञान बड़े-बड़े ऋषियों को भी दुर्लभ था वह उनको प्राप्त हो गया और सब संशय मिट गए।

अब वे राजकुमार सिद्धार्थ से भगवान् गौतम बुद्ध बन गए।

अब उस महान पुरुष ने सारे संसार को आनन्द-प्राप्ति का सच्चा मार्ग दिखाने का बीड़ा उठाया। वहां से चलकर वे सबसे पहले अपने पांच साथियों के पास

ऋषिपत्तन नामक स्थान पर गए और उन्हें उपदेश दिया। उस उपदेश का उनके ऊपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने चरण पकड़ लिए और शिष्य बन गए।

इसी स्थान पर बाद में महाराज अशोक ने सारनाथ स्तूप बनवाया।

राजगृह में प्रचार

भगवान् गौतम बुद्ध ऋषिपत्तन से चलकर महाराज बिम्बसार की राजधानी राजगृह में पधारे। समाचार पाते ही महाराज अपने मंत्रियों को साथ लेकर उनकी सेवा में आए। सभी नगरवासी युवक-युवतियां बालक और वृद्ध इस महापुरुष के दर्शन के लिए उमड़ पड़े।

भगवान् ने सबको उपदेश दिया कि कठोर तप करते हुए शरीर को सुखाना और भोगों की अधिकता, इन दोनों के बीच का मार्ग ही मुक्ति का मार्ग है। सब पापों को छोड़कर शुभ कर्मों को करो। हिंसा, द्वेष, छल और चतुराई छोड़कर सब जीवों के साथ प्रेम करो। जैसे माता अपने प्राण देकर भी पुत्र की रक्षा करती है, उसी तरह सत्य-धर्म का पालन करो।

मधुर उपदेश सुनकर मगधराज बिम्बसार का हृदय भक्ति से भर गया और वह उसी समय उनका शिष्य बन गया। उसने 'वेणुवन' नामक सुन्दर उद्यान उन्हें भेंट में दिया। यहां के सहस्रों लोगों ने भगवान् गौतम बुद्ध का धर्म स्वीकार किया और अपने जीवन को पवित्र किया।

बौद्ध धर्म का प्रचार दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। अनेक स्थानों से भगवान् बुद्ध के पास निमन्त्रण आने लगे। सबके पास मेरा पहुंचना कठिन है, ऐसा विचार करके आपने उन शिष्यों को, जो उपदेश दे सकते थे,

आज्ञा दी, "भिक्षुओ ! मानव-जाति के कल्याण के लिए, उनके दुःख दूर करने के लिए अपने हृदय को दया से भरपूर करके जाओ और मेरे संदेश को संसार के कोने-कोने में फैला दो।"

बौद्ध भिक्षुओं ने सारे संसार में बौद्ध धर्म का नाद गुंजा दिया। चीन, जापान और अन्य कई देश आज बौद्ध धर्म को मानते हैं।

आश्रम

उन दिनों राजगृह में अनाथपिंडक नामक धनवान् भी आया हुआ था। वह बड़ा दानवीर और दुखियों की सेवा करने वाला था। वह भगवान् का यश सुनकर उनके चरणों में आया। भगवान् बुद्ध ने उसे बताया कि सारा संसार नियम में बंधा है, धर्मरूपी नींव पर ही यह संसार ठहरा हुआ है। अतएव धार्मिक जीवन बिताने से ही परम आनन्द मिलता है। जिसका मन सम्पत्ति में लिप्त है, उसे चाहिए कि वह सब त्याग दे। परन्तु जो धन का सदुपयोग करता है, उसमें फंसा नहीं है, उसको घर छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। तुम खूब परिश्रम से धन कमाओ। धन के दास न बनो, धन के स्वामी बनो। आगे उन्होंने कहा कि जो भिक्षुक घर छोड़कर विलासी जीवन बितात

है, वह तिरस्कार के योग्य है। आलसी और पुरुषार्थ-रहित जीवन घृणा के योग्य है।

अनाथपिंडक ने भगवान से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि मैं कोशल देश का वासी हूं। वह बड़ा सुन्दर देश है। मेरी अभिलाषा है कि वहां एक ऐसा स्थान बनवाऊं जो आपके योग्य हो। भगवान् ने उसकी बात मान ली और अपने एक शिष्य को उसके साथ भेज दिया।

शिष्य ने श्रावस्ती नगर में जो स्थान चुना, वह वहां के राजकुमार का था। राजकुमार उस उत्तम भूमि को देना नहीं चाहता था। परन्तु अनाथपिंडक के विवश करने पर उसने कहा कि जितनी भूमि को रत्नों से भर दोगे, वह तुम्हारी हो जाएगी। उस दानवीर धनी ने अपने कोष को खोल दिया। भूमि को रत्नों से सजा दिया गया।

अनाथपिंडक का त्याग देखकर राजकुमार अवाक् रह गया। उसने उसी धन से नगर के बाहर एक बड़ा सुन्दर भवन बनवाकर भगवान् बुद्ध के निवास के लिए भेंट किया।

अब इस यशस्वी सेठ ने उस भूमि पर भगवान् और उनके शिष्यों के लिए मनोहर स्थान बनवाया।

स्थान के बन जाने पर उसने भगवान् को पधारने के लिए निमन्त्रण भेजा।

जिस दिन भगवान् गौतम बुद्ध नगर में पधारे, नगर दुल्हन की भांति सजाया गया। सब नगरवासी उस महान् आत्मा के दर्शन के लिए दौड़ पड़े। उनका उपदेश और तेजस्वी रूप देखकर कोशलवासी निहाल हो गए। यहां भी सहस्रों लोगों ने शिष्य बनकर अपना जीवन पवित्र कर लिया।

जन्मभूमि का उद्धार

राजा शुद्धोदन ने जब अपने पुत्र का यश सुना तो वह फूला न समाया। उसने पुत्र की सेवा में संदेश भेजा कि हम लोगों को कब अपने दर्शनों से कृतार्थ करेंगे। भगवान् बुद्ध पिता का संदेश पाते ही कपिलवस्तु की ओर चल पड़े।

जब राजा को उनके आने का समाचार मिला, तो वह सब नगरवासियों को साथ लेकर उन्हें लेने के लिए गया। पिता-पुत्र का अद्भुत मिलन देखकर सबका हृदय गद्गद हो गया।

राजा अपने पुत्र को भिक्षुक के वेश में देखकर बहुत दुखी हुआ। इस पर पुत्र ने पिता से कहा, "पूज्य पिताजी ! आपको तो प्रसन्न होना चाहिए। आपका पुत्र सारे संसार को आनन्द का सच्चा मार्ग

बता रहा है। यह हम सबका कितना बड़ा सौभाग्य है! ऐसा विचार करने से आपको शान्ति मिलेगी।" पुत्र का उपदेश सुनकर पिता का दुःख जाता रहा।

भगवान् बुद्ध के सभी संबंधी मिलने आए, पर देवी यशोधरा न आईं। भगवान् उनसे मिलने के लिए स्वयं गए। उन्होंने देखा कि उस देवी के शरीर पर न तो कोई आभूषण है और न ही बढ़िया कपड़े। देवी यशोधरा अपने पतिदेव के पांव पर गिरकर फूट-फूटकर रोईं। जब उन्होंने ससुर को पास खड़े देखा, तो वह लज्जा से पीछे हट गईं।

जिस दिन से भगवान् ने घर छोड़ा, उस महान् देवी ने अपने बाल कटवा दिए, आभूषण उतार दिए, सादा कपड़े पहनकर मिट्टी के बर्तनों में भोजन करती और भूमि पर सोती।

भगवान् बुद्ध अपनी धर्मपत्नी का त्यागमय जीवन देखकर प्रसन्न होकर बोले, "देवि! तुम धन्य हो। तुमने अपने श्रेष्ठ आचरण से जो पाया है, वही परम औषधि बनकर तुम्हारे सारे दुःखों को आनन्द में बदल देगा। परन्तु बड़ी सावधानी से इस दुर्लभ सम्पत्ति की रक्षा करना।" अब भगवान् बुद्ध यहां से चलकर नगर के बाहर एक उद्यान में आ गए।

कपिलवस्तु के सहस्रों लोगों ने शिष्य बनकर अपने जीवन को संवार लिया। भगवान् के परिवार के बहुत लोग भिक्षुक बन गए। उनके पुत्र राहुल और चचेरे भाई देवदत्त ने भी बौद्ध धर्म स्वीकार किया। यहां पर देवियों को भी भिक्षुक बनाया गया। भगवान् की माता गौतमी और देवी यशोधरा ने सबसे पहले बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।

अंगुलिमाल

अंगुलिमाल नामक एक डाकू था। वह जिसे भी लूटता, उसकी अंगुलियां काट लेता था। लोग उससे बहुत भयभीत थे।

एक बार उस डाकू ने भगवान् बुद्ध को पकड़ लिया। वह भगवान् का सुन्दर रूप देखकर चकित रह गया। सचमुच सन्तों का दर्शन बड़े-बड़े पापियों को धर्मात्मा बना देता है। वह भगवान् के चरणों में गिर पड़ा। भगवान् ने उसे डाकू से बौद्ध भिक्षु बना दिया।

वह भिक्षा मांगने नगर में निकला। लोगों को विश्वास न हुआ। वे समझने लगे कि डाका डालने की कोई नई चाल चल रहा है। नगरवासियों ने बड़ी-बड़ी लाठियों से उसका शरीर छलनी कर दिया। वह

भगवान् के चरणों में लौट आया। भगवान् बोले, "यह बहुत ही अच्छा हुआ। पाप का कमाया हुआ रक्त सब बह गया।" इस पर महात्मा अंगुलिमाल अपने सिर पर स्वयं एक लाठी मारकर बोला, "भगवान् ! यह मेरी बुद्धि ही सदा बुराई की ओर ले जाती रही है, इसे भी दण्ड मिलना चाहिए।"

भगवान् ने उसकी सेवा अपने हाथों से की। समय पाकर वह स्वस्थ हो गया और एक आदर्श भिक्षुक बन गया।

अंतिम दिन

धर्म-प्रचार करते-करते भगवान् गौतम बुद्ध ४0 वर्ष की आयु के हो गए। अपना अन्त समय जानकर उन्होंने सब भिक्षुओं को पास बुलाया और कहा कि किसी को कोई बात पूछनी हो तो पूछ लो।

एक भिक्षु ने दोनों हाथ जोड़कर पूछा, "भगवन् ! ब्राह्मण किसे कहते हैं ?" भगवान् ने बताया, "जिसने वीरता से इच्छाओं को वश में कर लिया है, जो विवेकी परोपकार के जीवन में रत है, वही ब्राह्मण है; पूजा का पात्र है।"

अब दूसरे भिक्षु ने प्रश्न किया, "भगवन् ! सभी गुरुजन गुप्त मंत्र देते हैं, परन्तु आपने कभी कोई गुप्त बात नहीं बताई ?" भगवान् बोले, "एक तो बुरे लोगों की आपसी राय गुप्त होती है और दूसरे गुरुजन अपने

प्रभाव को बनाए रखने के लिए गुप्त ज्ञान रखते हैं। परन्तु मेरे पास कोई गुप्त ज्ञान नहीं है। जैसे चन्द्रमा संसार को ठंडक और प्रकाश देता है, जैसे सूर्य अपने ताप से प्राणियों को जीवन देता है, वैसे ही मेरा धर्म भी धनी, निर्धन, ऊंच, नीच सबको शान्ति का अमर संदेश देता है।"

अब तीसरे भिक्षु ने प्रश्न किया, "हे भगवन्! मृत्यु पर कैसे विजय पाई जाए?" भगवान् बुद्ध बोले, "भिक्षुओ, मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूं। एक कृष गौतमी नामक स्त्री थी। उसका इकलौता पुत्र मर गया। वह दु:ख से इतनी व्याकुल हुई कि पुत्र के शव को गोद में लिए औषधि मांगती फिरती थी। लोग उसे पगली कहने लगे। अन्त में एक आदमी ने उसे मेरे पास भेज दिया। मैंने उसे कहा कि जिस घर में पुत्र, पिता आदि कोई न मरा हो, वहां से मुट्ठी भर राई ले आओ। मैं तुम्हारे पुत्र को जिला दूंगा। वह देवी नगर के एक-एक घर पर गई, परन्तु सभी कहते, "देवि! हमारे मृतकों की याद न दिलाओ, हमें मत रुलाओ। जीवित थोड़े हैं, किन्तु मरे बहुत हैं।" नगर में एक भी घर ऐसा नहीं निकला जिनका कोई न मरा हो। अब उस देवी की आंखें खुलीं और वह मेरे स्थान पर लौट आई।

मैंने उसे उपदेश दिया, "माता ! संसार में जो बना है, वह अवश्य मिटेगा। सब प्राणी यह जानते हुए भी कितनी निश्चिन्तता और लापरवाही से जीवन बिताते हैं। मूर्ख कहता है, यह मैंने किया, वह मैंने किया। वह सबको अपने अधीन करना चाहता है, किन्तु अपने-आपको अधीन नहीं करता। शोक ! कुछ समय बाद यह शरीर पृथ्वी पर पड़ा रह जाएगा। संभलो ! सत्य धर्म का वीरता से पालन करते हुए अमर हो जाओ।"

यह उपदेश समाप्त होते-होते भगवान् के पेट में बड़ी भयंकर पीड़ा उठी। वह उस स्थान से चल पड़े और पावा नामक स्थान पर पहुंचे। वहां चंड नाम का एक श्रद्धालु ठठेरा रहता था। उसने भगवान् को बड़े प्रेम से भोजन कराया। भोजन समाप्त होते ही भगवान् की पीड़ा और बढ़ी।

यहां से भगवान् कुशीनगर की ओर बढ़े। चलते-चलते उन्हें बड़ी प्यास लगी और थककर एक पेड़ के नीचे ठहर गए। उन्होंने पानी मंगाकर पिया और अपने शिष्यों से बोले, "श्रद्धालु भक्त चंड से जाकर कहना कि भगवान् ने अन्तिम बार तेरा भोजन पाया, इसलिए तेरा महान् कल्याण होगा।"

ये शब्द कहने के बाद भगवान् की वाणी रुक

गई और धीरे-धीरे उनकी अमर आत्मा ने नाशवान् शरीर को छोड़ दिया।

प्रभात होते ही भगवान् बुद्ध की मृत्यु का समाचार सब जगह फैल गया। अनगिनत संख्या में भिक्षुक और गृहस्थ इकट्ठे हुए। चिता सुगंधित पदार्थों से भर दी गई। सबने बड़ी श्रद्धा से वन्दना की। देखते-ही देखते वह शरीर भस्म हो गया।

इस प्रकार भगवान् गौतम बुद्ध दुःखी संसार को शान्ति का सच्चा मार्ग बताकर चले गए। वे प्रायः पांच बातों का उपदेश करते :

1. हिंसा मत करो,
2. चोरी मत करो,
3. झूठ मत बोलो,
4. शराब आदि नशे मत करो, और
5. व्यभिचार मत करो।

हमारी भारत सरकार ने भी भगवान् बुद्ध की 2500वीं जयन्ती बड़े समारोह से मनाई। सब बौद्ध देशों के लोग इकट्ठे हुए। संसार में शान्ति कैसे हो, इसके उपायों पर विचार किया। भगवान् गौतम के अमर उपदेशों को आचरण में लाने से संसार सचमुच सुखी हो सकता है।

●●●

आशा है, यह पुस्तक आपको पसन्द आई होगी। इसी प्रकार अन्य महापुरुषों की जीवनियां भी आप हमारे यहां से प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा भारती का सदैव यह प्रयास रहा है कि विविध विषयों में उत्कृष्ट प्रकाशनों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया जाए। यह सब आपके हार्दिक सहयोग पर ही निर्भर है। यदि आप इस प्रकार की पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखते हों तो हमें लिखिए, हम आपकी हर प्रकार से सहायता करने की कोशिश करेंगे।

मुद्रक : मेहरा ऑफसेट प्रेस, दरियागंज, नई दिल्ली-2

4872